मोहन राकेश के नाटकों में स्त्री-पुरुष के सम्बन्धों की विडम्बना और एक दूसरे के अभाव की रिक्तता

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. VII, Issue No. XIV, April-2014, ISSN 2230-7540

AN INTERNATIONALLY INDEXED PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL

IGNITED MINDS Journals

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. VII, Issue No. XIV, April-2014, ISSN 2230-7540

मोहन राकेश के नाटकों में स्त्री-पुरुष के सम्बन्धों की विडम्बना और एक दूसरे के अभाव की रिक्तता

Anita*

Research Scholar, South India, Hindi Prachar Sabha, Dharwad, Karnataka

शोध पत्रः- राकेश ने 'आषाढ़ का एक दिन' नाटक में जीवन स्पन्दन को पकडते हुए मूल्य-बोध द्वारा नाटक को समग्रता प्रदान की है। नाटक के पात्र जीवन्त और स्वाभाविक हैं। व्यक्ति मन का विश्लेषण बड़े ही सूक्ष्म और हृदयग्राही ढंग से किया गया है। राकेश को स्त्री-पुरुष के सम्बन्धों की विडम्बना को अलग-अलग स्तरों पर पकड़ने के प्रयत्न में सफलता मिलती है। जिसका प्रदर्शन राकेश के कहानी, उपन्यास और नाटक सभी विधा की रचना में होता है। अपनी सभी रचना-विधाओं में राकेश ने आज की व्यवस्था का माखौल बखूबी उड़ाया है।

---------------------------------x---------------------------------

नाटक का नायक कालिदास मल्लिका को छोड़कर उज्जैन नहीं जाना चाहता, लेकिन मल्लिका कालिदास को प्रेरित कर उज्जैन जाने के लिए विवश कर देती है। कालिदास उज्जैन जाने के बाद हमेशा मल्लिका के अभाव को महसूस करता रहा लेकिन एक बार ग्राम्य प्रान्त में आने पर भी मल्लिका से नहीं मिल पाता और मिलता है तो एक अजनबी और परायेपन के धरातल पर ही- कालिदास और मल्लिका के संवाद से जाहिर है-

"कालिदास- पहचानती नहीं हो, और न पहचानना ही स्वाभाविक है, क्योंकि में वह व्यक्ति नहीं हूं जिसे तुम पहले पहचानती रही हो।

मल्लिका- और मैं जो तुम्हें देख रही हूं, वास्तव में मैं मैं ही हूं।

कालिदास- देख रहा हूं कि तुम भी वह नहीं हो, सब कुछ बदल गया है।

यथार्थ है कि यहाँ हूं, बहुत दिनों की यात्रा करके थका, टूटा-हारा हुआ यहाँ आया हूं कि एक बार यहाँ के यथार्थ को देख सकूं।"1

दोनों एक दूसरे के अभाव में आत्म निर्वासित और परायेपन के बोध से जर्जर और टूटे हुए हैं। कालिदास और मल्लिका की निकटता दूरी में बदल गई है। मल्लिका के लिए कालिदास की उपस्थिति मेहमान के स्तर पर ही महत्व रखती है और कालिदास मल्लिका के घर में अनाधिकार चेष्टा कर प्रवेश पाने वाले यात्री की तरह अनुभव करता है। एक-दूसरे के अभाव में दोनों छटपटाने की प्रक्रिया से गुजरते हैं। मल्लिका कालिदास के सम्पूर्ण जीवन में नहीं रही, लेकिन उनके मन में कालिदास के लिए ऐसी मधुर भावना है जो विलोम की पत्नी और माँ बनने पर अलग नहीं हो पाती।

मल्लिका स्पष्ट कहती है- "मैंने कभी तुम्हें अपने से दूर नहीं होने दिया। तुम रचना करते रहे, और में समझती रही कि मैं सार्थक हूं, मेरे जीवन की भी उपलब्धि है।"2 मल्लिका कालिदास के अभाव की पूर्ति न तो बच्ची से कर पाती है और न तो विलोम से जुड़कर ही। वह कहती है- "अभाव तुम थे, वह दूसरा नहीं हो सका। परन्तु अभाव के कोष्ठ में िकिसी दूसरे की जाने कितनी-कितनी आकृतियाँ हैं।"3 इस तरह स्त्री मन के यथार्थ रूप का चित्रण नाटककार ने किया है स्वयं लेखक ने कहा भी है- "मल्लिका जो कालिदास की आस्था का विस्तारित रूप है। मल्लिका का चरित्र एक प्रेयसी और प्रेरणा का ही नहीं, भूमि में रोपित उस स्थिर आस्था का भी है जो ऊपर से झुलस कर भी अपने मूल में विरोपित नहीं होती।"4 मल्लिका का प्रेम कालिदास के लिए प्रेरणा का बीज बनता है। लेकिन कालिदास को राज्यभार और प्रियंगु के पति रूप मल्लिका से वंचित ही रखा, लेकिन मल्लिका का प्रेम कालिदास के लिए प्रेरणादायी बना। क्योंकि कालिदा उज्जैन का राजकवि, राज्याधिकारी और राजकुमारी प्रियंगु जैसी पत्नी को पाकर भी अपनी बालसंगिनी मल्लिका को विस्मृत नहीं कर पात, उस स्मृति की टीस उसके मन में अहर्निश सालती रहती है। कालिदास ने कहा भी है-

''मेघदूत' के यक्ष की पीड़ा मेरी पीड़ा है और विरह विमर्दिता यक्षिणी तुम हो।''5

दोनों का प्रेम दोनों को एक-दूसरे के लिए होनेवाले कल की प्रतीक्षा में अहर्निश तोड़ता है। एक तरफ मल्लिका कालिदास के लौटने और यशस्वी होने की प्रतीक्षा और बोध में खण्डित हो रही है जिसमें आस्था की गन्ध होने से रोमेन्टिक बोध की अभिव्यक्ति हुई हैं लेकिन कालिदास के अन्दर मल्लिका से जुड़कर पुनः जी लेने की जो ललक थी वह मल्लिका से मिल लेने पर समाप्त हो जाती है। कालिदास कहता भी है-''जिस कल की मुझे प्रतीक्षा थी वह कल कभी नहीं आया और मैं धीरे-धीरे खण्डित हो गया।''6 कालिदास मल्लिका की उपेक्षा तो करता है लेकिन उसके बिना जी नहीं पाता हैं उसके संवाद में उसकी मनःस्थिति का चित्रण स्वाभाविक रूप से हुआ है। इस प्रकार कालिदास भविष्यहीनता के संत्रास से खण्डित, निराश और असफल होने के बोध से टूटता है।

आज के आधुनिक युग में परिवार के परिप्रेक्ष्य में नारी की मानसिकता में क्रंातिकारी परिवर्तन किया है। समाज, परिवार और वैयक्तिकता के संदर्भ में राकेश के नारी पात्रों की मानसिकता को उद्घाटित करने से स्पष्ट होता है कि वह आन्तरिक और बाहय दोनो ही स्तरों पर अपनी वर्तमान परिस्थितियों की निर्माता होते हुए भी उसकी नियंता नही हो पाती। मोहन राकेश के नारी पात्र आधुनिक संदर्भो से अछूते नही है। राकेश ने अपने नारी पात्रों के चरित्रो के माध्यम से आज के आदमी की एकंातिक पीड़ा, आन्तरिक बैचनी, भीड़ के बीच अनजान और निर्वासिंत होकर जीने की विवशता, अपने आप को सुरक्षित रखने की ललक को आत्मसात कर व्यक्ति घटना और परिस्थिति को एक व्यापक संदर्भ में देखा पहचान है। शहरी वातावरण में 'पति-पत्नी के एक दूसरे से दूर जाने और जुड़े रहने की प्रक्रिया दिखाकर आधुनिकता को स्पष्ट किया है।

उनके नारी पात्रों में आधुनिकता कभी जीवन से जुड़कर, कभी विचारों के मतभेद पर, कभी संवेदनात्मक के धरातल पर, कभी राजनैतिक संदर्भ में, कभी आर्थिक तंगी से जुझकर दोहरे व्यक्तिाव के संदर्भ में स्पष्ट हुई है। राकेश के नारी पात्रों ने सिर्फ उसे देखा ही नही है बल्कि वह उसकी सहभोक्ता भी बनी है मोहन राकेश के सहित्य में परम्परा और आधुनिकता का द्वन्द्व नारी पात्रों में प्रवरता से दिखाई देता है।

बहुत कुछ पाने के लालच में व्यक्ति प्राप्त को भी खो बैठता है सावित्री की मुठठी में जो था वह भी धीरे-धीरे फिसलता गया। महेन्द्र सावित्री को पति रूप में प्राप्त था पर वह तो और कुछ भी पाना चाहता थी परिणाम यह हुआ कि महेन्द्र भी उसके हाथ से निकाल गया। सावित्री के मन से एक भय और भटकन व्याप्त हो गई उसका मन शंकाल बन गया, असुरक्षा की भावना उसके मन मे घर कर गई और वह अपनी पूर्णता की तलाश मे इधर-उधर भटकने को बाध्य हुई। आधे-अधूरे की सावित्री एक के बाद एक पुरूश को आजमाती है और फिर केवल अपनी जिन्दगी जीने के लिए एक बार फिर जगमोहन के पास पहुचती है जाते हुए वह एक दूसरे जीवन की कल्पना लेकर जाती है किन्तु लौटती है तो हाथों का लिंजालिजा पसीना लेकर। आधुनिक विचारो वाली सावित्री अपने को परम्परा से विच्छिन नही कर पाती। अतंतः घर वापस लौट आती है।"7

आधुनिकता और विज्ञान के इस युग में मनुश्य मात्र एक पुर्जा बनकर रह गया। बदलते परिवेश के साथ-साथ उसकी मानसिकता का स्तर भी बदल है वह आपसी रिष्तो मे केन्द्रित और संकुचित होता जा रहा है। एकान्त की इच्छा और अकेलापन बिलगाँव की स्थिति लाता है।

आधुनिक युग बोध की स्थिति ने मनुश्य की समाज मान्यताओ और सामाजिक रीति-रिवाजो से काट दिया है। यह विधटन व्यक्ति परिवार, समाज देश सर्वत्र व्याप्त है। महतंवाकाक्षिणी आधुनिक नारी सावित्री जीवन के सभी भैतिक सुख-साधनों को संचित करना चाहती है। परिवार के सदस्य एक साथ रहने भर से घर नही बनाते। वे एक दूसरे से सुख-दुख, आषा-आकाक्षाओं मे सहपात्र,सहयोग करते हुए परिवार बनाते है, किन्तु इस परिवार में इसका अभाव है सभी नारी-पात्र आधे-अधूरे व्यक्तित्व के स्वामी है। 'अंधेरे बद कमरे' में खुरषींद का पिता इबादत अली हिम्मत के साथ सबके बीच जिन्दा रहकर आधुनिकता को स्वीकार करता है उसकी बेटी खुरषींद षादी के पहले गर्भवती हो जाती है, पास-पडौस इस बात को स्वीकार नही करता है लेकिन इबारत अली स्वीकार करता है इस तरह बुढढे इबादत अली की टूटती जिन्दगी के बीच आधुनिकता स्पष्ट होती है। वह परंपरा को छोड़ आधुनिकता को स्वीकार करता है।"8

आज के युग में हमारा समाज विशेषकर नगरीय समाज एक प्रकार से सांस्कृतिक संक्रमण काल से गुजर रहा है। आध्यामित्कता का लोप होता जा रहा है। हमारे मन से संतोश, धैर्य, सौहार्द आदि गायब होते जा रहे है और उनके स्थान पर भैतिकता का साम्राज्य विस्तृत होता जा रहा है। हम भैतिकता के मोहजाल में ऐसे फँस गए है कि अब उससे बचने या बहार निकालने के लिए भी हम कसमसा कर जाते है। स्वतंत्रता-प्राप्ति के पष्चात जब नारी को घर की चारदीवारी से बाहर निकलकर काम,काजी, नौकर-पेषा वाली स्त्री के रूप में काम करने का अवसर मिला है तो वह अनेक पुरूशो के सम्पर्क मे आई और इस प्रकार युगों-युगों से दबी आ रही विकृत काम-कुण्ठा अपनी समस्त बाधाओं, मर्यादाओं आदि को तोड़कर बाहर निकल आई विशेषकर मध्यवर्ग के परिवषें में इस भैतिकवादी प्रवृति ने अटूट

माने जाने वाले पति-पत्नी, माँ-बेटी आदि के रिष्तों को उसी तरह खोखला कर दिया है जिस प्रकार दीमक लकड़ी को और घुन गेहूं को खोखला कर देता है।“9

संदर्भ सूची

1. मोहन राकेश, आषाढ़ का एक दिन, पृ. 103
2. वही, पृ. 99
3. वही, पृ. 100
4. मोहन राकेश, लहरों के राजहंस, पृ. 9
5. मोहन राकेश, आषाढ़ का एक दिन, पृ. 109
6. वही, पृ. 108
7. आधे-अधूरे-मोहन राकेश प्रष्ठ-76
8. कहानीकार मोहन राकेश – डॉ. सुषमा अग्रवाल प्रष्ठ-80
9. आधुनिक गद्य साहित्य – डॉ. श्रीचन्द्र जैन एवं राहुल गर्ग प्रष्ठ-11

Corresponding Author

Anita*

Research Scholar, South India, Hindi Prachar Sabha, Dharwad, Karnataka

aditi.adi6@gmail.com